B.A.LL.B. (1st semester)

ECONOMICS

Unit - 1

Introduction

अर्थशास्त्र के क्षेत्र से तात्पर्य अर्थशास्त्र के अध्ययन की परिधि से लगाया जाता है। इस आधार पर अर्थशास्त्र के क्षेत्र के अंतर्गत-

1) अर्थशास्त्र की विषय सामग्री

2) अर्थशास्त्र का स्वभाव

1) अर्थशास्त्र की विषय सामग्री :- अर्थशास्त्र की विषय विषय सामग्री के अंतर्गत विभिन्न वर्ग के अर्थशास्त्रियों द्वारा क्रमबद्ध तरीके से अर्थशास्त्र की जो परिभाषाएं दी गई है को शामिल किया जाता है। इसका कारण यह है कि परिभाषा ओं के माध्यम से अर्थशास्त्र द्वारा अर्थशास्त्र के कार्य क्षेत्र का वर्णन किया गया है। अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का विवरण संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार किया जा सकता है।

* धन संबंधी विचारधारा

* कल्याण संबंधी विचारधारा

* दुर्लभता संबंधी विचारधारा

* विकास केंद्रित विचारधारा

2) अर्थशास्त्र का स्वभाव :- अर्थशास्त्र के स्वभाव के अंतर्गत अर्थशास्त्र का अध्ययन निम्न बिंदुओं के अंतर्गत किया जाता है।

१- अर्थशास्त्र विज्ञान है

२- अर्थशास्त्र कला है

३- अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है

४- अर्थशास्त्र एक आदर्श विज्ञान

- अर्थशास्त्र विज्ञान है :- विज्ञान से तात्पर्य किसी भी विषय के क्रमबद्ध ज्ञान जो कि कारण और प्रभाव के मध्य संबंध स्थापित करता है से होता है । विज्ञान की एक अन्य विशेषता यह भी है कि उसकी घटनाओं को उचित रूप में माप के लिए उत्तरदाई बनाया जा सकते। विज्ञान की इन विशेषताओं के आधार पर हम पाते हैं कि अर्थशास्त्र में उदाहरण के लिए मांग का नियम यह स्पष्ट करता है कि यदि वस्तु की कीमतें बढ़ेंगी तो मांग घट जाएगी। यहां कीमत में वृद्धि होना कारण है तमांग का घटना प्रभाव को दर्शाता है। अर्थशास्त्र विज्ञान है जिसके अपने सिद्धांतों और सिद्धांत 'कारण 'व 'प्रभाव' के मध्य संबंध को स्थापित करता है।

- अर्थशास्त्र कला है:- वैज्ञानिक सिद्धांतों के व्यावहारिक प्रयोग के तरीकों को कला कहते हैं। विज्ञान कुछ सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है जबकि कला उन सिद्धांतों को व्यावहारिक प्रयोग में लाना सिखाती है । इस संबंध में प्रोफ़ेसर का उत्साह ने कहा है कि विज्ञान हमें सिद्धांत विज्ञान की शिक्षा देता है जबकि कला व्यवहारिक क्रियाओं का प्रशिक्षण देती है। इस परिभाषा के आधार पर अर्थशास्त्र को विज्ञान एवं कला माना गया है। अर्थशास्त्र की अनेक शाखाएं हैं जो आर्थिक समस्याओं का समाधान करने में हमें व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। उपभोग का प्रतिस्थापन नियम हमें यह बताता है कि अपने व्यय से अधिक संतुष्टि कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार गरीबी के कारण और प्रभाव का अध्ययन विज्ञान है और गरीबी निवारण अर्थात गरीबी को नियंत्रित करने के सिद्धांत को लागू करना कला है अतः अर्थशास्त्र विज्ञान एवं कला दोनों है। इसे केवल विज्ञान अथवा केवल कला करना उचित नही है।

- अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है:- वास्तविक विज्ञान इस बात पर प्रकाश डालता है कि 'क्या है 'और इस बात पर कुछ भी स्पष्ट नहीं करता, कि 'क्या होना चाहिए' वास्तविक विज्ञान यह इंगित नहीं करता कि समाज के लिए क्या उचित है और क्या अनुचित है यह केवल समस्या का आर्थिक विश्लेषण कर परिणाम प्रस्तुत करता है।

- अर्थशास्त्र एक आदर्श विज्ञान है:- अर्थशास्त्र आदर्श विज्ञान है और इस बात को स्पष्ट करता है कि क्या होना चाहिए आदर्श विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र का संबंध नैतिक दृष्टिकोण से अधिक घटनाओं का मूल्यांकन करने से है।

★ अर्थशास्त्र की प्रणालियां

प्रणाली से तात्पर्य उस तर्क पूर्ण विधि से होता है जिसके माध्यम से सत्यता की खोज कर सिद्धांतों एवं नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। इस प्रकार विज्ञान 'कारण 'और 'परिणाम 'परिणाम के मध्य संबंध को स्थापित करते हुए कुछ विधियों एवं प्रणालियों के आधार पर निष्कर्ष अथवा परिणाम की प्राप्ति कर नियमों का विकास किया जाता है। क्योंकि अर्थशास्त्र भी विज्ञान की श्रेणी में स्वीकार आ गया है अतः उसे भी अपने सिद्धांतों व नियमों का

प्रतिपादन करने के लिए कुछ विधियों एवं प्रणालियों की सहायता लेनी पड़ती है। सामान्यतः अर्थशास्त्र के अंतर्गत सिद्धांतों के विकास एवं खोज के लिए निम्न दो विधियो को प्रयोग में लाया जाता है।

1) निगमन प्रणाली (डिडक्टिव मेथड):- इस प्रणाली को अनुमान प्रणाली, काल्पनिक प्रणाली, विश्लेषण विधि अथवा अमूर्त रीति आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है। इस प्रणाली के अंतर्गत मानव व्यवहार के कुछ स्वयं सिद्ध सिद्धांत self-evident अथवा निर्विवाद बातों को लेकर तरक क माध्यम से व्यक्तिगत परिस्थितियों का अनुमान लगाया जाता है। उदाहरण के लिए यह एक स्थापित सत्य है कि अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत बढ़ने पर वस्तु की मांग में कमी आती है। यह नियम सामान्यतः सभी व्यक्तियों पर लागू होता है और कोई भी व्यक्ति वस्तु की कीमत बढ़ने पर मांग कम कर देता है। इस प्रकार निगमन प्रणाली के माध्यम से हम सामान्य सत्य से विशिष्ट सत्य की खोज करते हैं।

2) आगमन प्रणाली (इंडक्टिव मेथड) : - आगमन प्रणाली को अनुभव प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है। यहां निगमन प्रणाली सामान्य सत्य से विशिष्ट सत्य की खोज की व्याख्या व्याख्या करती है वही आगमन प्रणाली के अंतर्गत विशिष्ट सत्य से सामान्य सत्य की खोज पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि निर्धन ,मध्यम वर्ग तथा धनी वर्ग की आय के संबंध में आंकड़े एकत्रित कर ,वर्गीकरण कर ,उनका अध्ययन कर ,निष्कर्ष प्राप्त किया जाता है और इस आधार पर सामान्य अवधारणा की स्थापना की जाती है। अतः अनुभव प्रणाली के अंतर्गत किसी विशेष मामले के परीक्षण के आधार पर सामान्य अर्थात सार्वभौमिक नियम स्थापित किए जाते हैं।

Choice as an Economic problem

अर्थव्यवस्था में चयन की समस्या

अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्या निम्नलिखित है:-

1) **क्या उत्पादन करें?**

2) **कैसे उत्पादन करें?**

3) **किसके लिए उत्पादन करें?**

1) क्या उत्पादन करें:- यह समस्या वस्तु के उत्पादन से संबंधित समस्या है कि कौन सी वस्तु उत्पादन किया जाए क्योंकि वस्तुएं दो प्रकार की होती हैं:-

१- उपभोक्ता वस्तु :- उपभोक्ता वस्तु वह वस्तु होती है जो हमारी आवश्यकता ओं को प्रत्यक्ष रूप से पूरी करती है। उदाहरण ,वॉशिंग मशीन ,कोलगेट पेस्ट ,दाल, चावल शक्कर ,आदि।

२- पूंजीगत वस्तुएं :- पूंजीगत वस्तु वह वस्तु होती है जो लाभ कमाने के लिए की जाती है उदाहरण के लिए किसान के लिए फावड़ा ट्रैक्टर मशीन आदि।

अर्थव्यवस्था में अब समस्या यह उत्पन्न होती है कि हमारे देश में कौन सी वस्तु का उत्पादन किया जाए, उपभोक्ता वस्तु या पूंजीगत वस्तु। अगर हम उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करते हैं तो हमारा देश पिछड़ जाएगा हमारे पास तकनीकी नहीं होगी। और यदि पूंजीगत वस्तु का उत्पादन करते हैं तो हमारी रोज की जो जरूरत की चीजें हैं वह कम हो जाएगी। और अगर दोनों उपभोक्ता और पूंजीगत वस्तुओं का निर्माण करते हैं तो इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए रोज की जरूरतों की चीजें और मशीनरी का उत्पादन भारत जैसे देश में करना नामुमकिन है। और यह प्रश्न भी सामने आता है कि कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए यह समस्या भी अर्थव्यवस्था में उत्पन्न होती है।

2) कैसे उत्पादन करें:- कैसे उत्पादन करें यह समस्या अर्थव्यवस्था में तकनीक से संबंधित है, कि किन तकनीकों का उपयोग करके उत्पादन किया जाए-

१- श्रम प्रधान तकनीक:- यदि हम श्रम प्रधान तकनीक का उपयोग करके प्रोडक्शन करते हैं तो उसमें श्रमिक ज्यादा होंगे और

२- पूंजी प्रधान तकनीक:- यदि हम पूंजी प्रधान तकनीक का प्रयोग कार्य के प्रो।डक्शन करते हैं तो उसमें मशीनें ज्यादा प्रयोग में होंगी

अब समस्या यहां पर यह उत्पन्न होती है, कि अगर हम पूंजी प्रधान तकनीक का प्रयोग करके प्रोडक्शन करेंगे ,तो हमारी जो भारत की जनसंख्या है, वह अत्याधिक मात्रा में बेरोजगार हो जाएंगे । उदाहरण:- टीचिंग को हम रिप्लेस कर के अगर उसकी जगह पर मशीन का प्रयोग करें जैसे ऑनलाइन क्लासेस करें, तो जो शिक्षक है वह बेरोजगार हो जाएंगे।

3) किसके लिए उत्पादन करें :- अब अर्थव्यवस्था में तीसरी समस्या यह उत्पन्न होती है कि जो भी उत्पादन हो वह किसके लिए हो इसके लिए उत्पादन किया जाए धनी वर्ग के लिए या निर्धन वर्ग के लिए यह समस्या अर्थव्यवस्था के सामने उत्पन्न होती है।

१- धनी वर्ग के लिए उत्पादन किया जाए? या

२- निर्धन वर्ग के लिए?

यदि उत्पादन धनी के लिए किया जाता है तो उससे सरकार को काफी लाभ मिलता है सरकार उन उत्पादन में काफी लाभ कम आती है और यदि सिर्फ निर्धन वर्ग के लिए उत्पादन किया जाए तो वह उत्पादन समाज कल्याण की दृष्टि से होता है जिसमें सरकार को कोई भी फायदा नहीं होता है।

मांग तथा मांग का नियम

Demand and Law of Demand

★ मांग की परिभाषा तथा अर्थ:-

मांग का संबंध प्रभावी मांग से लगाया जाता है। इस वाक्य का तात्पर्य यह है कि मांग को वास्तविक मांग में करने के लिए तीन तत्वों का उपस्थित होना आवश्यक है।

१) वस्तु को खरीदने की प्रबल इच्छा

२) वस्तु को खरीदने के लिए साधन (मुद्रा)की उपलब्धता

३) साधन (मुद्रा)को वस्तु की खरीद पर करने की तत्परता।

इस वर्ग की परिभाषा में प्रमुख अर्थशास्त्री पेंशन हैं जिन्होंने मांग को इस प्रकार परिभाषित किया है-

" मांग 1 प्रभावी इच्छा है जिसमें तीन बातें शामिल होती हैं ,वस्तु की प्राप्ति की इच्छा, वस्तु को खरीदने के लिए उपलब्ध साधन और साधनों को खर्च करने की तत्परता।"

*** मांग का नियम (Law of Demand)**

" मांग का नियम वस्तु की कीमत तथा मांग की मात्रा के बीच के संबंध को दर्शाता है वस्तु की कीमत बढ़ने पर वस्तु की मांग घट जाएगी और कीमत कम हो जाने पर मांग बढ़ जाएगी ।"

*** मांग के नियम की मान्यताएं**

1. उपभोक्ता की आय में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
2. उपभोक्ता की रूचि, स्वभाव व पसंद में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
3. संबंधित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
4. वस्तु प्रतिष्ठित वस्तुओं की श्रेणी में नहीं होनी चाहिए।
5. वस्तु की कोई स्थानापन्न वस्तु बाजार में नहीं आनी चाहिए।

*** मांग वक्र (Demand Curve)**

कीमत	वस्तु की मात्रा
10	2
8	3
5	5

(Diagram)

x अक्ष पर वस्तु की मांग की मात्रा तथा Y अक्ष पर वस्तु की कीमत दर्शाई गई है। जब वस्तु की कीमत ₹10 है तो उसकी मांग दो इकाई की है जब कीमत घटकर ₹8 हो गई तो वस्तु की मात्रा बढ़कर 3 हो गई। इसी प्रकार वस्तु की कीमत घटकर ₹5 हो जाती है तो वस्तु की मांग बढ़कर 5 इकाई हो गई ।अतः स्पष्ट है कि कीमत के घटने पर मांग बढ़ती है।

*** मांग पत्रकार ऋण। त्मक ढाल होने के कारण:-**

"वस्तु की मांग तथा वस्तु की कीमत की मात्रा के मध्य विपरीत संबंध होता है और इस संबंध को जब चित्र के रूप में दर्शाया जाता है तो हमें मांग वक्र प्राप्त होता है जो कि बाएं से दाएं नीचे की ओर गिरता हुआ होता है अर्थात उसका ढाल ऋण। त्मक होता है।"

मांग वक्र का ऋण ।त्मक ढाल होने के निम्नलिखित कारण हैं-

१) उपयोगिता ह्रास नियम:- उपभोक्ता वस्तु की कीमत का भुगतान वस्तु की सीमांत उपयोगिता के आधार पर करता है। जैसे-जैसे उपभोक्ता वस्तु की मात्रा का उपभोग बढ़ाता है वस्तु की अतिरिक्त इकाई के उपभोग से मिलने वाली उपयोगिता अर्थात सीमांत उपयोगिता घटती जाती है इसे ही उपयोगिता ह्रास नियम कहते हैं।

२)   प्रतिस्थापन प्रभाव:-   जब किसी वस्तु की कीमत में कमी की जाती है और उससे संबंधित अन्य वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो ऐसी स्थिति में उक्त वस्तु अन्य संबंधित वस्तुओं की तुलना में सस्ती प्रतीत होने लगती है या यूं कहा जाए कि अब संबंधित वस्तुएं तुलनात्मक रूप में महंगी लगती है। वह वस्तु जिसकी कीमत में कमी आई है की मांग बढ़ने लगती है क्योंकि अब उपभोक्ता अन्य संबंधित वस्तु के स्थान पर व्यक्ति इस वस्तु का प्रतिस्थापन करने लगते हैं इसे प्रतिस्थापन प्रभाव करते हैं जो की मांग वक्र के बाएं से दाएं नीचे गिरने का एक कारण है।

*** मांग को प्रभावित करने वाले तत्व**

1) वस्तु की कीमत

2) संबंधित वस्तुओं की कीमत

3) उपभोक्ता की आय

4) आय एवं संपत्ति का वितरण

5) रुचि एवं फैशन

6) मौसम एवं जलवायु

7) जनसंख्या

8) भविष्य में वस्तु की कीमत परिवर्तन का अनुमान

9) विज्ञापन

पूर्ति का नियम

(Law of Supply)

Meaning of Supply:-

"जिस प्रकार मांग का नियम मात्राओं को दर्शाता है जिसे एक उपभोक्ता अलग-अलग कीमत पर क्रय करने को तैयार रहता है उसी प्रकार पूर्ति वस्तु की उच्च मात्रा को दर्शाता है जिसे उत्पादक अलग-अलग कीमतों पर बाजार में बेचने को तत्पर रहता है। "

*** पूर्ति का नियम:-**

पूर्ति का नियम वस्तु की पूर्ति की मात्रा तथा पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व जैसे तकनीकी उत्पादन का स्तर के मध्य संबंध को व्यक्त करता है । पूर्ति का संबंध वस्तु की कीमत के साथ स्थापित किया जाता है।

"पूर्ति कीमत बढ़ने के साथ बढ़ेगी तथा कीमत के घटने पर घट जाएगी। इस प्रकार वस्तु की कीमत एवं वस्तु की पूर्ति के मध्य सीधा संबंध होता है और पूर्ति वक्र का स्वरूप बाएं से दाएं ऊपर को चढ़ता हुआ होता है।"

वस्तु की कीमत अधिक होने पर उत्पादक का लाभ बढ़ेगा जो कि उसे वस्तु की अधिक मात्रा उत्पादित तथा बेचने के लिए प्रोत्साहित करेगा ।पूर्ति के नियम को पूर्ति तालिका एवं पूर्ति वक्र के माध्यम से समझाया जा सकता है।

कीमत	वस्तु की पूर्ति मात्रा
10	0
20	6
30	12
40	16
50	18

उपयुक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि जब वस्तु की बाजार कीमत ₹10 निर्धारित की जाती है तो कोई भी उत्पादक वस्तु का उत्पादन एवं बिक्री करने को तैयार नहीं होता है अतः इस कीमत पर वस्तु की पूर्ति 0 दर्शाई गई है। इस प्रकार जब वस्तु का विक्रय मूल्य ₹30 प्रति इकाई निर्धारित किया जाता है तो उत्पादक वस्तु की 12 इकाइयां तथा बिक्री मूल्य ₹50 पर 18 इकाइयां का उत्पादन एवं बिक्री करने को तत्पर रहते हैं। अतः स्पष्ट है कि वस्तु की कीमत जितनी अधिक होगी वस्तु की पूर्ति मात्रा भी उतनी ही अधिक बढ़ती जाएगी।

Diagram

*   पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व:-

१. कीमत

२. संबंधित वस्तुओं की कीमत

३. उत्पादन तकनीक

४. साधन लागत

५. सरकार की कर नीति

६. प्राकृतिक आपदाएं

७. परिवहन एवं संचार सुविधाएं

८. भविष्य में कीमत परिवर्तन का अनुमान.

*** मूल्य तंत्र की भूमिका:-   मूल तंत्र एक तरीका है जिसमें माल या सेवाओं की कीमतें, माल और सेवाओं की आपूर्ति, उपभोक्ता की मांग को प्रभावित करती है, मुख्य रूप से मांग की कीमत की लोच से है । एक मूल तंत्र उपभोक्ता और विक्रेता की मांग और पूर्ति को प्रभावित करता है जो की वस्तु की कीमत पर बातचीत करते हैं, और उसमें वस्तु की कीमत निर्धारित होती है।**

***   बाजार संतुलन:-   ऐसी स्थिति जब जिस मूल पर एक वस्तु की मांग जितनी मात्रा ग्राहक खरीदना चाहता है उसी मूल्य पर उसकी पूर्ति उपलब्ध होती है ऐसा होने पर इसे बाजार संतुलन कहते हैं दूसरे शब्दों में जब मांग वक्र और पूर्ति वक्र दोनों एक दोनों रेखाएं एक दूसरे को जिस बिंदु पर काटती हैं उस बिंदु पर कीमत निर्धारण होता है उसी बिंदु को बाजार संतुलन कहते हैं जहां मांग और पूर्ति बराबर होती है।**